

MODEL ANSWERS

B.A. (Hon's) Third Semester Examination, 2013

POLITICAL SCIENCE

Paper : VI<sup>th</sup> Comparative Government  
w  
Politics (Part-I)

SECTION- A

Q. 1.

- (i) — France फ्रांस
- (ii) — Six छः
- (iii) — James Bryce (a) जैम्स ब्राइस
- (iv) — Political Socialisation (a) राजनीतिक समाजीकरण
- (v) — Prisoners (d) बंदी
- (vi) — Technical (d) तकनीकी
- (vii) — Adhesive Party System (d) निष्पक्षमेवाली दल व्यवस्था
- (viii) — Jai Prakash Narayan जय प्रकाश नारायण
- (ix) — Edam Smith एडम स्मिथ
- (x) — Politics and Market (b) पॉलिटिक्स व्हे मार्केट



SECTION - B

Q. No. 2

DIMENSIONS OF POLITICAL CULTURE

Political Culture is a pattern of orientations towards political objects. It is also a sign of a stage where people accompanied in a political environment.

According to Almond and Verba, there three dimensions:—

① Cognitive Orientation

• Knowledge of political subjects/matter and alertness.

② Affective Orientation

• Passion and sentiments towards these subjects.

③ Evaluative Orientation

• Value judgement of a person towards these subjects.

आमोड और वर्बा के अनुसार राजनीतिक संस्कृति के आयाम:—

राजनीतिक संस्कृति का अर्थ है राजनीतिक विषयों के प्रति अज्ञानि-वासों का प्रतिमान अर्थात् समाज का कोई भी सदस्य अपने राजनीतिक पर्यावरण के संदर्भ में अपने आप को कहां रखता है? यह अज्ञानि-वास तीन प्रकार का होता है:—

- ① ज्ञानात्मक अज्ञानि-वास: राजनीतिक विषयों का ज्ञान और उसके आस्तित्व के प्रति सजगता.
- ② भावात्मक अज्ञानि-वास: इन विषयों के प्रति व्यक्ति के मन में पैदा होने वाले भावबोध.
- ③ मूल्यपरक अज्ञानि-वास: इन विषयों के बारे में व्यक्ति का मूल्य निर्णय.



### Essay on Bi-party System

- Write an Introduction about Political Parties, Genesis of Political Parties and types of Political Parties.
- Existence of Two Political Parties in Britain and U.S.A.
- In Parliamentary System, two Political Party System is the best for Political Stability. If one Governs, Second does watch, respectively.
- India and major signs of evolving two political parties.
- Conclusion: Two Political Party System is very fruitful for any Parliamentary System. It strengthens democracy and empowers people.

### द्विदलीय व्यवस्था पर एक निबंध

- राजनीतिक दल क्या होते हैं? इनकी उत्पत्ति कैसे होती है और कितने प्रकार के होते हैं? इन प्रश्नों को हल करते हुए प्रस्तावना में ब्रिटेन एवं अमेरिका में द्विदलीय व्यवस्था को लिखेंगे।
- संसदीय प्रणाली में द्वि-दलीय व्यवस्था लोकतंत्र को मजबूत करने वाली होती है। एक दल जहाँ शासन करता है, वहीं दूसरा दल विपक्ष के रूप में शासन की गतिविधि पर नज़र रखता है।
- भारत में द्विदलीय व्यवस्था के उच्चार पर लिखेंगे।
- निष्कर्ष: द्विदलीय व्यवस्था लोकतंत्र के लिए शुभ और लोगों को मजबूत करने वाला है।



Q.4 Essay on Social Movement in India

- The term is coined by Saint Simon. (1760-1825)
- India is a vast, diverse and heterogeneous society, that's why social problems exist. In every section of society, we see a fight for a cause.

- Peasant Movement:

- Against Raitwadi
- Bengal (1870)
- Punjab (1890-1900)
- Champaran (1917)
- Telangana (1946-48)
- Naxalbari (1967)

- Women's Movement:

- Sati Pratha w Brahm Samaj
- Theosophical Society and Annie Besant
- Savitri Bai Fule and Women Education

- Dalit Movement:

- Satyasodhak samaj and Jyotiba Fule.
- Untouchability and Dr. Ambedkar's effort
- Mahatma Gandhi and Harijans.

- Tribal Movement:

- Bissa Munda and Oraon Movement
- Rani Gaidalu and Naga Problem.



भारत में सामाजिक आंदोलन

- सेंट साइमन (1760-1825) द्वारा 'सामाजिक आंदोलन' शब्द को प्रथम प्रयोग में लाया गया।

- भारत एक बड़ा, विविध और असमजातीय समाज वाला देश है इसलिए यहां कई सामाजिक समस्याएं पायी जाती हैं। समाज के हर भाग में कोई न कोई समस्या रही है, इसीलिए अनेक परिवर्तन हेतु सामाजिक आंदोलन होते रहे हैं। जैसे कि -

- किसान आंदोलन :
  - दक्षिण में ईश्वरवाड़ी प्रजा के गेवलाफ आंदोलन
  - बंगाल (1870) में किसान आंदोलन
  - पंजाब (1890-1900), तेलंगाना (1946-48) एवं चेन्नै (1912) में किसान आंदोलन।
  - 1967 में तमिलनाडु में शुरू हुआ किसान विद्रोह

- महिला आंदोलन :
  - सती प्रथा एवं ब्रह्म समाज का उन्मूलन करें।
  - मिथोसोफिकल सोसाइटी एवं एनी बेसेंट
  - लाविनि बाई फूले एवं महिला शिक्षा

- दलित आंदोलन :
  - क्षत्रसोध्यक समाज एवं ज्योतिबा फूले से लीपें।
  - दुआदत की समस्या और STP अम्बेडकर का प्रयास
  - महात्मा गांधी का हरिजनोद्धार

- आदिवासी विद्रोह :
  - बिरसा मुंडा और ओरांव विद्रोह
  - रानी गिडालू और नगा समस्या।



Q.N. 5

Distinction between Interest Group and Pressure Group.Introduction:

Interest Group is a big phenomenon while pressure group has its limitations. Pressure Group herself is a interest group but the basic distinction occur due to their tactics, i.e.

- Interest Group claims for their right into Court. While Pressure group feeds government through manipulated data's.
- Pressure Groups are more vocal than Interest Group. Pressure Groups do public opinion into their favour through Radio, Television.
- Pressure Group organises Seminal, Symposium, Speeches etc. Interest group less or little.
- Pressure Groups do rally, strike, lobbying for ~~their~~ their specific interests. Also does finance to political parties in Election for due favours.

द्वि-समूह और एक-समूह में अंतर

- द्वि-समूह एक व्यापक अन्वेषण / प्रवर्तना है जबकि एक-समूह एक संकीर्ण व सुदृढ़ समूह।
- दोनों को अपने हितों की रक्षा के साधनों को लेकर विन्नेद है: —

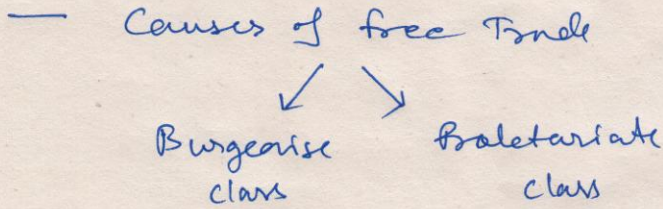
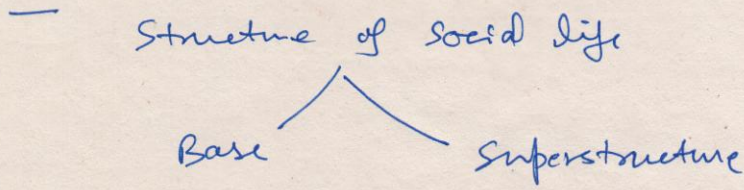


- दिस सभ्रद अपने अधिकारो हेतु न्यायालय की शरण लेते हैं। जबकि अम्बार ही सब्रद मैनीपुलेटेड आंकड़ो के माध्यम से सरकार पर दबाव बनाते हैं।
- सब्रद सभ्रद, दिस सभ्रदों से अधिक मुखर होते हैं। सब्रद सभ्रद रेडियो, टेलीविजन इत्यादि के माध्यम से अपने पक्ष में जनमत प्रचार करते हैं।
- सब्रद सभ्रद सेमिनार, रैली, दूराल और लाविंग के माध्यम से अपने विरोध दितो की पूर्ति का साधन करते हैं। वे राजनीतिक दलो को अपने दितो की पूर्ति हेतु धन मुहैया भी करते हैं। जबकि दिस सभ्रद विवरा-विवरा रहता है।

### Q.10-6 Marxist view on Political Economy

#### Introduction.

Karl Marx/Engle's view on Changing. How due to means of production and forces of production, mode of production change. Capitalism is an epoch production system and it has own historical reason. It will certainly ruin through its contradictions.



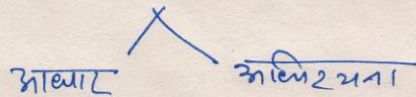
— Antonio Gramsci's view and Dependency theory.

राजनीतिक आर्थिकी पर मार्क्सवादी विचार

— प्रस्तावना

समाज में उत्पादन के साधनों और उत्पादन की शक्तों में परिवर्तन होने के साथ ही उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन आते हैं। (मार्क्स एवं एंगेल्स) पूंजीवाद एक युग विशेष की उत्पादन प्रणाली है जो कि अपने अन्तर्विरोधों से ध्वस्त हो जायेगी।

— सामाजिक जीवन की संरचना



— मुद्रा व्यापार का परिणाम, बुजुर्गों और सर्वहारा वर्ग का अन्तर्विरोध गहराना।

— फ्रंटोनियो ग्राम्शी और निर्भरता सिद्धांत



Q.N.7 Modern Approaches to the Study of Comparative Politics:

- uses of psychological instrument to understand political behaviour started with Graham Wallas 'Human Nature in Politics'. Also, the Process of Government written by Arthur Bentley did use new methods. However after II.WW using of Scientific Method, Quantitative methods Behavioural technique counts in modern approach. Sociological and Marxian method are also new and modern approaches into the study of Comparative Politics.
- Characteristics of Modern Approach.
- Conclusion.
  - मनोवैज्ञानिक तरीको से राजनीतिक व्यवहार को समझने का प्रथम प्रयास ग्राहम वालास के 'ह्यूमन नेचर इन पोलिटिक्स' में मिलता है। उसी प्रकार 'द प्रोसेस ऑफ गवर्नमेंट' द्वारा आर्थर बेंटले ने नये तरीको को समझे रखा।
  - द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से राजनीति विज्ञान में



नये उपागमों और पद्धतियों पर जोर दिया जाने लगा गया। जिसे वैज्ञानिक पद्धति, गुणात्मक पद्धति, व्यवहारिक पद्धति इत्यादि नाम दिए गए।

- समाजशास्त्रीय पद्धति और मार्क्सवादी पद्धति को भी तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागमों में रखा जाता है।
- आधुनिक उपागमों के लक्षण नीचे।
- निम्न।

Q. 10.8

### Chief Characteristics of Social Movements

- Introduction to Social Movement
- People participation and spontaneous leadership.
- Mass involvement and common goal.
- Loose organization
- It is a sign of ~~the~~ a struggle against social evils.
- Demand of new ethics and values.
- Conclusion. (New Education system and urbanisation are the causes for social movement)



- सामाजिक आंदोलन कुछ ऐतिहासिक परिवर्तनों के संदर्भ में जन्म लेते हैं।
- कुछ प्रचलित रीति-रिवाजों, नियमों, कठिनों से असंतुष्ट लोग नये मूल्यों एवं आचार की स्थापना करना चाहते हैं।
- उसकी जड़ में नई शिक्षा व्यवस्था और शस्त्रीकरण भी हैं।
- लोग स्वभावतः नये मूल्यों के लिए एक संकल्प ले लेते हैं।
- सामाजिक आंदोलन में नेतृत्व स्वभावतः जनप्राप्त है।
- आम लोगों की सहभागिता रहती है।
- निरर्थक

Dr. R.P. Yadav  
Asst. Professor,  
Dept. of Political  
Science  
GGU.